पंचम अध्याय

अध्याय - 5

सारांश एवं सुझाव

प्रारभिक शिक्षा को रुचिकर बनाने के लिए आज कई कार्यक्रम हमारे देश मे चलाये जा रहे है जिनमे से मुख्य कार्य शिक्षक प्रशिक्षण का है । शिक्षको का प्रशिक्षण जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम के अतर्गत लगातार हो रहा है । जो मुख्यत विषयगत दक्षता आवश्यकताओ और बाल केन्द्रित गतिविधि पर आधारित है । सामान्यीकरण, सार्वजनीकरण शिक्षा अभियान के अतर्गत वर्तमान 21वी नई सदी मे प्रारभिक शिक्षा को अनिवार्य शिक्षा का मौलिक अधिकार के अतर्गत 14 वर्ष तक के बालको को शिक्षा की अनिवार्य व्यवस्था हेतु प्रशिक्षित शिक्षको के श्रेष्ठ प्रशिक्षण पर भी ध्यान दिया जाना सुनिश्चित किया जाना है इसी सदर्भ मे अध्ययन

"डी.पी.ई.पी. के संदर्भ में प्राथमिक शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की विषयगत प्रशिक्षण आवश्यकताओं का अध्ययन ।"

5.1 उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित है –

1 प्राथमिक स्तर प्रशिक्षणार्थियो की विषयगत अपेक्षित ज्ञान का अध्ययन निम्न बिन्दुओ पर करना

अ प्राथमिक स्तर मे अपेक्षित सामान्य ज्ञान की दक्षताओ का अध्ययन करना

ब प्राथमिक स्तर मे अपेक्षित गणित की दक्षताओ का अध्ययन करना

स प्राथमिक स्तर मे अपेक्षित हिन्दी ज्ञान की दक्षताओ का अध्ययन करना

द प्राथमिक स्तर मे अपेक्षित सामाजिक विज्ञान की दक्षताओ का अध्ययन करना

इ प्राथमिक स्तर मे अपेक्षित विज्ञान की दक्षताओ का अध्ययन करना

2 प्रशिक्षणार्थियो की विषयगत प्रशिक्षण उपलब्धि का अध्ययन करना

3 भविष्य मे प्रारभिक अध्यापन प्रशिक्षण के सुधार हतु सुझाव देना

Regional Institute of Education LIBRARY Bhopal

5.2 अध्ययन विधि एवं उपकरण

प्रस्तुत शोध कार्य मे म प्र के दो (डाइट) पन्ना और नौगॉव (छतरपुर) के जिला प्रशिक्षण सस्थान (डाइट) के 50–50 प्रशिक्षणरत प्रारभिक अध्यापक प्रशिक्षको के कुल 100 प्रशिक्षको के द्वारा व्यावहारिक ज्ञान, गणित हिन्दी, सामाजिक विज्ञान, विज्ञान आदि के विषयगत दक्षता प्रशिक्षण आवश्यकताओ के अध्ययन । प्रश्नावली प्रपत्र के द्वारा प्रश्नोत्तर प्रक्रिया को अपनाया गया जो प्रत्येक प्रशिक्षणार्थी के द्वारा भरवाकर विश्लेषण कर

5.3 मुख्य परिणाम

प्रस्तुत शोध के मुख्य परिणाम निम्नलिखित है –

प्रपत्र 1 सामान्य व्यावहारिक समझ के गणित से सबधित प्रश्न पूछे गये जो प्रारभिक बच्चो को शिक्षण विधियो से सबधित कुल 16 प्रश्न थे । प्रत्येक के चार–चार विकल्प दिये गये थे जिनमे टिक करके अपने मत का इजहार करना था ।

100 प्रशिक्षणार्थियो के द्वारा प्राप्त परिणामो से 25 प्रतिशत ने सही उत्तर दिये एव 4 प्रतिशत ने गलत उत्तर दिये और 71 प्रतिशत प्रशिक्षणार्थियो ने अपना किसी भी प्रकार का मत प्रकट न करके प्रश्न खाली छोड दिये । अत प्रश्नावली 1 मे परिणाम 75 प्रतिशत गलत ही पाये गये जो पूर्णतया असतोषजनक ही कहा जा सकता है ।

प्रपत्र 2 इसमे गणित से सबधित 20 प्रश्नो के उत्तर जो लिखने के क्रम मे थे, को भरवाया गया । 100 डाइट प्रशिक्षणार्थियो के प्राप्त परिणामो से प्रारभिक अध्यापक की दक्षता हेतु इन उत्तरो मे 66 प्रतिशत सही उत्तर एव 4 प्रतिशत गलत उत्तर ओर 30 प्रतिशत खाली छोड दिये गये प्रश्नो के द्वारा अपने मत को व्यक्त किया गया है । भार मापन गणित मे न्यूनतम अधिगम स्तर, जोड दशमलव ज्ञान, लीप वर्ष, गुणनखण्ड आदि को ज्यादातर प्रशिक्षणार्थियो ने प्रश्नो को खाली ही छोड दिया । गणित के न्यूनतम अधिगमो को किसी ने भी नही बताया है अत कुल औसत सही योग को उतना सतोषजनक नही कहा जा सकता है ।

प्रपत्र 3 इसमे हिन्दी विषय के प्रारभिक अध्ययन हेतु सामान्य कहानी अनुच्छेद और व्याकरण से सबधित प्रश्न थे जो कुल 6 प्रश्नो के उप–प्रश्नो मे विभक्त होकर 2–2 वाक्यो के लिखने हेतु रखे गये थे।

100 डाइट प्रशिक्षणार्थियो मे से 27 प्रतिशत नेसही एव 51 प्रतिशत ने गलत और 22 प्रतिशत ने अपने प्रश्नो को रिक्त ही छोड दिया हे अर्थात् कोई भी प्रतिक्रिया नही की ।

इसलिए हिन्दी मे परिणाम अत्यन्त ही निराशाजनक रहे ।

प्रपत्र 4 इसमे सामाजिक विज्ञान के प्रारभिक कक्षाओ से सबधित 14 प्रश्नो मे से केवल दो प्रश्न–गगा की सहायक नदियॉ एव कार्यपालिका के प्रतिनिधित्व वाले प्रश्नो के अलावा अन्य प्रश्नो के दो–दो वाक्यो मे भी किसी मे भी सतोषजनक परिणाम नही मिल पाये है अर्थात् 64 प्रतिशत सही एव 2 प्रतिशत रिक्त और 34 प्रतिशत गलत उत्तर देकर प्रशिक्षणार्थियो ने गणित की तरह ही अपनी दक्षताओ को प्रदर्शित किया है ।

प्रपत्र 5 विज्ञान के 12 प्रश्नो मे प्रत्येक के विकल्प दिये गये थे सिर्फ नमक का बनना वाले प्रश्न को लिखकर बताने के अलावा सभी प्रश्न टिक मार्क से सबधित थे जिनमे–चन्द्रग्रहण, मनुष्य का ताप, नमक का बनना, पाचक रस बनने वाले प्रश्नो को सर्वाधिक रिक्त छोडा गया या गलत उत्तर दिया गया, बाकी प्रश्नो के द्वारा 100 प्रशिक्षणार्थियो की कुल औसत जानकारी 60 प्रतिशत सही उत्तर एव

Regional Institute of Education LIBRARY

1 प्रतिशत रिक्त और 39 प्रतिशत गलत उत्तर देकर अपनी विषयो की दक्षताओ के परिणामो को प्रदर्शित किया गया जो पूर्ण रूप से, गणित, सामाजिक विज्ञान की तरह सतोषजनक नही कहा जा सकता है ।

5.4 समस्याऐं

समस्याऐ तो जीवन का अग है । प्रशिक्षण हो या अध्यापन हरेक दो पहलू मे एक पहलू समस्या से जुडा होता है और इन समस्याओ का निदान पूर्ण रूप से कभी नही हो पाता और जीवन समाप्त हो जाता है ।

प्रारभिक अध्यापकीय प्रशिक्षण मे, चयनित होकर प्रशिक्षण के लिए आये प्रशिक्षणार्थी अपने प्रारभिक शिक्षा को चार साल पीछे धकेल कर आते है अत उनको बहुत–सी बुनियादी विषयो के ज्ञान का स्मृतिहास हो जाता है क्योकि जिन विषयो से वर्तमान या भविष्य मे रु–ब–रु होकर साक्षात्कार नही होता है वह धारणा से हटकर अचेतन मस्तिष्क मे विलीन हो जाती है अत इन विषयो पर तभी ध्यान दिया जाता है जब वास्तविक समस्या की बाधा को पार करना आवश्यक हो जाता है ।

इसलिए इसकी प्रबलतम समस्या जीवनोपयोगी आर्थिक जरुरतो से है जो कार्य या नौकरी के द्वारा ही पूर्ण हो सकती है तभी यह विषयगत दक्षताओ की आवश्यकताओ को गहराई से स्मृति मे धारण करने मे रुचि रखेगे । अर्थात् समस्याऐ विषयगत दक्षताओ की आवश्यकताओ के साथ–साथ उनमे आत्मनिर्भरता की ज्यादा होती विषयगत समस्याओ की कम ।

5.5 समस्याओं का निदान

समस्याओ का निदान प्रशिक्षण के पूर्व चयन के समय और प्रशिक्षण दौरान विषयगत ज्ञान के मापन की आवश्यकताओ को ध्यान मे रखकर किया जाना चाहिये अगर आवश्यकता है तो इन्हे प्रशिक्षण के दौरान उन विषयो से प्रशिक्षित करना जरूरी हे अथवा चयन के पूर्व भी इन दक्षताओ को देखा जा सकता है ।

अत व्यावहारिक ज्ञान, गणित, हिन्दी, सामाजिक विज्ञान, विज्ञान जैसे अनिवार्य विषयो मे इन्हे दक्षता प्रशिक्षण देना जरूरी किया जाना चाहिये, क्योकि आने वाली पीढी के लिए हमे भविष्य की नीव को मजबूत बनाकर राष्ट्र के लिए कुछ करने की प्रेरणा दी जानी चाहिये ।

5.6 सुझाव

प्रशिक्षणार्थी अपने कार्य मे सतुष्ट नही है और वह किसी भी विषयो की दक्षताओ की आवश्यकताओ के बारे मे भी नही जानना चाहते है । शोधकर्त्ता की दृष्टि से प्रारभिक प्रशिक्षणार्थी को निम्न सुझाव प्रेरणा के स्त्रोत हो सकते है –

1 अध्यापकीय कार्य गुणवत्ता पर निर्भर हे अत कार्य के चयन के पूर्व यह सुनिश्चित करना चाहिये कि कार्य कठिन हो या सरल उसमे निरतर दक्षता हासिल करते रहने का प्रयास करके, जीवन को मजिल पाने के करीब लाने मे गुणवत्ता मददगार साबित होती है अत विषयो के अध्ययन पर लगातार परिश्रम करते रहना सफलता की सीढी को प्राप्त करने के बराबर होता हे ।

2 शासन और सस्थान को इनके वर्तमान परिप्रेक्ष्य को ध्यान मे रखकर समयानुसार परिवर्तन करके

Regional Institute of Education LIBRARY

कार्य को सरल, सुगम और रुचिकर बनाने मे मददगार साबित होता है अत इनमे नित नये नवाचार करके परिवर्तन युक्ति सगत किये जाने चाहिये, ताकि प्रशिक्षणार्थी नीरस कार्यप्रणाली के द्वारा बाहर निकलकर रुचिकर दक्षतापूर्ण मनोवृत्ति को ग्रहण कर सके ।

3 सम्पूर्ण देश की जरूरतो और आने वाली पीढियो के लिए भविष्य की बुनियादी जरूरतो को ध्यान मे रखकर प्रशिक्षण कार्यक्रम सुनिश्चित किये जाने चाहिये ताकि कार्यक्रम रोजगार परक होकर बुनियादी जरूरतो को पूरा कर सके ।

4 वर्तमान का ध्यान रखकर भविष्य को समझकर प्रशिक्षणार्थियो पर कार्य के बोध पर उतना ही परिश्रम किया जावे, जो समाज की परिपूर्ति सतोषजनक करने मे सहायक हो, तथापि प्रत्येक कार्य को रोजगार परक होना जरूरी ही है ।

5 प्रत्येक प्रशिक्षणार्थी को यह सुनिश्चित बताया जावे कि उक्त कार्य कठिन है और इसमे इतना समय और धन व्यय होता है तथा कार्य की गारण्टी का कोई प्रश्न हो या न हो, इतनी न्यूनतम दक्षताऐ हासिल करनी आवश्यक मानी जाकर पूर्ण करना होगा ताकि वह पूर्ण तैयारी करके कार्य को अजाम दे सके ।

5 • 7, भविष्य के लिए सुझाव

1 यह शोध कार्य म प्र के दो जिला – पन्ना और नौगॉव (छतरपुर) को जिला प्राथमिक प्रशिक्षण सस्थान के प्रशिक्षणार्थियो पर ही आधारित है अन्य सस्थानो मे इसी तरह के परीक्षण लिये जा सकते है जिससे इस शोध के परिणाम से तुलनात्मक निष्कर्ष निकाले जा सकते है ।

2 इसी तरह का अध्ययन अध्यापकीय कार्य मे सलग्न अध्यापको पर किया जाना चाहिये ताकि उनकी विषयो की ज्ञान दक्षताऐ मापन की जा सके और परिणामो को सुधारात्मक प्रक्रिया मे लाया जा सके।

3 जिला प्राथमिक शिक्षा के अतर्गत प्राथमिक अध्यापको चाहे सेवारत हो या सेवापूर्ण सभी को विषयगत आवश्यक दक्षताओ को ग्रहण करने के लिए शोधकार्य एव सुझाव प्रक्रिया अपनायी जा सके, एव भविष्य के लिए उपलब्धि का अध्ययन करने मे रुचि दिखायी जानी चाहिये ।

4 हो सके तो इस तरह के शोधकार्य सम्पूर्ण प्रशिक्षण सस्थानो के अलावा जो शिक्षक 5 वर्ष से अधिक अध्यापन कार्य मे है उनके लिये भी किया जाना चाहिये ताकि न्यूनतम अधिगम दक्षताओ को अनिवार्य रूप से लागू करने मे मदद मिल सके ।

5 प्रत्येक बालक शिक्षक के ज्ञान पर आगे बढता है अत शिक्षक मे उन आवश्यक दक्षताओ क। होना अनिवार्य है जो बालक की वर्तमान और भविष्य की तत्कालिक जरूरतो को पूर्ण किया जा सके ।

Regional Institute of Education LIBRARY Bhopal